Thinking and observation ability of an infant

बच्चे भी एक परिपक्कव इंसान की तरह सोचते और समझतें हैं इसलिए उनके इशारों और पुकारों को बचपना समझने की बजाय गंभीरता से लें और उनको समझें:

उदाहरण के तौर पर: मैं आज मेरे घर पे मेरी बहन से बात कर रहा था जो उसकी ससुराल से २ महीनें बाद घर आई| हमारा एक भतीजा है जो तकरीबन ९ महीनें का है| मेरी बहन ने बताया कि पहले दिन तो भतीजा मेरे पास ही नहीं आया और जैसे ही मैं उसको गोद में लेने को आगे बढ़ी तो वो पीछे हट गया वो इसलिए क्योंकि बुआ उसको अनजान लगी और अपने होंठ बिचकाने लगा| पर अब जब मुझे ५ दिन हो चुके हैं आये हुए तो वो मेरे साथ सही से घुल-मिल गया है|

वैसे वो ज्यादातर समय अपनी दादी-दादा और माता-पिता के ही पास रहता है उसमे भी दादी के पास सबसे ज्यादा| सो उसका तो वही छोटा सा संसार है ४ लोगों का| जब उसके उस संसार में कोई दखल दे तो उसको पसंद नहीं|

ये ठीक वैसा ही व्यवहार है जैसे हम बड़े किसी अनजान से मिलते वक़्त करते हैं| हम अनजान से बात तभी करते हैं जब कोई जानकार उनसे परिचय करवाए या हमको उससे कोई काम हो| अन्यथा हम किसी भी राह चलते को न तो मुंह लगाते हैं और न ही उनसे बात करना पसंद करते हैं|

लेकिन जब यही व्यवहार एक बच्चा करे तो हम उसको बचपना कह के टाल जाते हैं जबकि छोटे बच्चों की अपने-पराये को पहचानने की शक्ति किसी भी बड़े इंसान के बराबर और शायद तीव्रता में उससे भी ज्यादा होती है|

किसी भी इंसान या छोटे बच्चे की सोच-समझ की शक्ति परिवेश और माहौल के अनुसार बदलती और प्रभावित होती है| यह माहौल और उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार तय करता है कि एक बच्चा सकारात्मक सोच के साथ बड़ा होता है या नकारात्मक सोच के साथ|

इसलिए सबसे बड़ी बात यह है कि बच्चे को उम्र में छोटा बेशक समझें पर सोचने और समझने की शक्ति में छोटा न आंक के उसके हाव-भाव को समझा जाए|

Courtesy: NH Advisory Board